कलियुग का कल्पवृक्ष

संकलनकर्त्री

सावित्री देवी

❀ मङ्गलाचरण ❀

कलियुग का कल्पवृक्ष

दोहा—जिहि के सुमिरण ध्यानते, बनत सकल शुभकाज।
सो गणेश वाणी सहित, ज्ञान दीजिये आज ॥१॥

सिद्धिसदन आनँद करण, मंगलमोद निधान।
लक्ष्मण अरु सीतासहित, रामचन्द्र भगवान ॥२॥

भरत शत्रुसूदन सहित, द्रवहु सो कृपा आगार।
चरण कमल अति प्रेम सों, वन्दौं बारम्बार ॥३॥

वन्दौं पद धर धरणि शिर, महावीर हनुमान।
बल बुद्धि विद्या दीजिये, निज जन मन अनुमान ॥४॥

रामायण के तिलक में, होहु सहायक आय।
चूक परै जो अर्थ में, दीजै आप बताय ॥५॥

कविता तुलसीदास की, गूढ़ विचित्र महान।
निजमति सों टीका कहूँ, आदर करहिं सुजान ॥६॥

जो पदार्थ भावार्थ अरु, गूढ़ यथामति आय।
जो वर्णत सब तिलक में, लखहु सुजन चितलाय ॥७॥

रामायण के तिलक हैं, यद्यपि बहुत अनूप।
तद्यपि मैं निज प्रीतिवश, लिखौं बुद्धि अनुरूप ॥८॥

यह टीका संजीवनी, सुख उपजावनिहारि।
पढ़ै सुनै जो प्रेम से, पावहिं सो फल चारि ॥९॥

❀ मङ्गलाचरण ❀

कलियुग का कल्पवृक्ष

दोहा—जिहि के सुमिरण ध्यानते, बनत सकल शुभकाज।
सो गणेश वाणी सहित, ज्ञान दीजिये आज ॥१॥
सिद्धिसदन आनँद करण, मंगलमोद निधान।
लक्ष्मण अरु सीतासहित, रामचन्द्र भगवान ॥२॥
भरत शत्रुसूदन सहित, द्रवहु सो कृपा आगार।
चरण कमल अति प्रेम सों, वन्दौं बारम्बार ॥३॥
वन्दौं पद धर धरणि शिर, महावीर हनुमान।
बल बुद्धि विद्या दीजिये, निज जन मन अनुमान ॥४॥
रामायण के तिलक में, होहु सहायक आय।
चूक परै जो अर्थ में, दीजै आप बताय ॥५॥
कविता तुलसीदास की, गूढ़ विचित्र महान।
निजमति सों टीका कहूँ, आदर करहिं सुजान ॥६॥
जो पदार्थ भावार्थ अरु, गूढ़ यथामति आय।
जो वर्णत सब तिलक में, लखहु सुजन चितलाय ॥७॥
रामायण के तिलक हैं, यद्यपि बहुत अनूप।
तद्यपि मैं निज प्रीतिवश, लिखौं बुद्धि अनुरूप ॥८॥
यह टीका संजीवनी, सुख उपजावनिहारि।
पढ़ै सुनै जो प्रेम से, पावहिं सो फल चारि ॥९॥

श्लोक—श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं लोके प्रसिद्धं परं।
भक्तानामभयप्रदं शिवमतं तापत्र्योन्मूलनम् ॥
नानाछन्दविचित्रभावसहितं मुक्तिप्रदं शाश्वतं।
तस्यातीव मनोहरा सुललिता व्याख्या मया तन्यते ॥

रामायण-माहात्म्य

दोहा—श्रीरघुपति पदपद्मगहि, अति हित बारंबार।
तिलक करूँ माहात्म्य का, कछुनिज मति अनुसार ॥

दोहा—गुरु हरिहर गणईश श्री, सुमिरौं तुलसीदास।
करत गोपाल माहात्म्य श्री, रामायण सुखरास ॥

मंगल—गुरु, विष्णु, शिव, गणेश, सरस्वती तथा तुलसीदासको स्मरण कर सुखकी राशि श्रीरामायण का मैं गोपाल दास 'महात्मय' निर्माण करता हूँ।

चौपाई—रामायण सुरतरु की छाया, दुख भये दूर निकट जो आया।
सप्तकाण्ड स्तम्भ सुहाई, दोहा लघु शाखा छवि छाई ॥

अर्थ—यह श्री रामायण कल्पवृक्ष छाया है जो भी इसके निकट आया है उसके सभी दुःख दूर हो गये, सातों काण्ड इस कल्पवृक्ष के सातों स्तम्भ हैं और दोहे छोटी-छोटी शाखाएँ हैं।

चौपाई—सुचि सोरठा सीठका कोई, पत्री बहु चौपाई जेई।
छन्दन की शोभा अतिरूरी, जनु नवीन अंकुर छबि पूरी ॥

अर्थ—अच्छे सोरठे डाली हैं और चौपाई कल्पवृक्ष के अनेक पत्ते हैं, छन्दों की शोभा अति सुन्दर हैं मानों छवि से भरे नये अंकुर हैं।

चौपाई—अक्षर सुमन रहे गहगाई, अति अद्भुत सुगन्ध कविताई।
विविध प्रकार अर्थ सोई फल, श्रोता सुमति स्वाद जानै भल ॥

अर्थ—और इसके अक्षर ही मानो गहगहे घने इस कल्पवृक्ष के फूल हैं। अनेक प्रकार के फल ही इसके अर्थ हैं, श्रेष्ठ बुद्धि वाले श्रोता ही इसके असली स्वाद को पहचान सकते हैं।

चौपाई—भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस रस, बीज दोय निर्गुण सगुण अस ।
मुनिभुशुण्ड शिव प्रथमहि गाई, सोई गाई जग हेतु गोसाईं ॥

अर्थ—भक्ति, ज्ञान, वैराग्य इसका सुन्दर रस है और निर्गुण-सगुण इसके दो वीज हैं। जो कथा जगत के निमित्त शिवजी और मुनि काकभुशुण्डजी ने प्रथम सुनायी थी, वही जगत के कल्याण हेतु गोसाईं जी नें गायी है ।

दोहा—तुळसीदास जी रामायण, नहीं करते परचार ।
कलि के कुटिल जीवों का, को करतो निस्तार ॥

अर्थ—जो श्री गुसाईं तुलसीदासजी रामायण का प्रचार नहीं करते तो कलि-युग के कुटिल जीवों का निस्तार कैसे होता (अर्थात् उद्धार होना वहुत मुश्किल था) ?

चौपाई—रामायण सुरधेनु समाना, दायक अभिमत फल कल्याणा ।
गुण समूह कपि सकै कौन गनि, जासु प्रभाव सरिस चितामनि ॥

अर्थ—यह श्री रामायण कामधेनु के समान है, जो सेवा करनेवालों को इच्छित फल देती है, इस रामायण के गुणों का बखान कौन कर सकता है ? जिसका प्रभाव चिन्तामणि के समान है ।

चौपाई—राम अयन रामायण आही । वर्णि पार पावै को ताही ॥
रामायण अद्भुत फुलवारी । राम भ्रमर भूषित रुचि भारी ॥

अर्थ—रामायण में राम स्वंय विराजमान हैं फिर इसका पार कौन पा सकता है यह रामायण अद्भुत फुलवारी है जिसके ऊपर अति सुन्दर रामरूपी भौंरा आकर बैठता है ।

चौ०-श्री रामायण जिहि घर माहिं, भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहिं ।
नहीं गति तहाँ दरिद्रहुँ केरी, तहँ श्री - महावीर की फेरी ॥

अर्थ—जिस घर में रामायण रहती है वहाँ भूत-प्रेत भूलकर भी नहीं जाते और द्ररिद्रता तो वहाँ रह ही नहीं सकती, श्रीहनुमानजी का उस घर में सदैव निवास रहता है ।

चौ०-यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती, रामायण मँह जानिय तेती।
प्रीती करै रामायण माहीं, तेहिसम भाग्यवंत कोउ नाहिं॥

अर्थ-जितनी यंत्र-मंत्र सगुनौति हैं वे सब रामायण में विद्यमान है, जो रामायण में श्रद्धा-प्रीति रखता है उसके समान संसार में कोई बड़भागी नहीं है।

चौ०-रामायण सम कोऊ नहीं, सब उपमा उपमेय।
उपमा भाषा और की, कैसे कोउ कवि देय॥

अर्थ-रामायण के समान कोई ग्रन्थ नहीं है यह सब उपमाओं की उपमेय है और भाषा अति सरल है, इसकी तुलना कोई कवि कैसे दे सकता है ?

चौ०-त्रेता में भये वाल्मिकी मुनि, ते कलियुग भये तुलसीदास पुनि।
शत करोर रामायण भाखी, इनमार्थसारसूक्ष्मराखी॥

अर्थ-त्रेता युग में मुनि वाल्मीकि हुए, वही फिर कलियुग में तुलसीदास जी के नाम से हुए। वाल्मिकि जी ने सौ करोड़ मन्त्र लिखी। इन्होंने सभी रामायण का विमोचन कर उनका सार भाग लेकर "रामचरित मानस" नामक रामायण रच डाला।

चौ०—प्रथम कांड है बाल रसीला, जन्म विवाह राम की लीला।
द्वितिय अयोध्याकांड प्रकाशा, पितु आज्ञा रघुवर वनवासा॥

अर्थ-रामायण के प्रथम (वालकाण्ड) में श्री रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह की लीला का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है तथा, दूसरे (अयोध्या काण्ड) में पिता की आज्ञा द्वारा भगवान् के वन-गमन की कथा कही गयी है।

चौ०-पुनि अरण्यकिष्किन्धा भाखौं, तह सुग्रीव शरण मँह राखौं।
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन, युद्धकाण्ड में मारे रावण॥

अर्थ-फिर अरण्यकाण्ड व किष्किन्धाकाण्ड का वर्णन किया है जिसमें

खर-दूषण जैसे महाबली राक्षसों के वध की कथा तथा सुग्रीव को बालि के भय से मुक्त किया और उसे शरण में रखना कहा है। 'सुन्दरकाण्ड' में पवनपुत्र हनुमान जी माता सीता की सुधि लाये हैं। यह काण्ड बड़ा ही मनोहर है, सुन्दरकाण्ड का नित्य पाठ करने से सभी संकट दूर हो जाते हैं और 'लंकाकाण्ड' में श्री रामचन्द्र जी के अद्भुत पराक्रम का वर्णन है जिसमें उन्होंने रावण को मार गिराया है।

चौ०—सप्तम उत्तरपरम अनूपा, उत्सव प्रभु कौशलपूर भूपा।
तुलसीकृत रामायण एती, विविध प्रकार कथा है केती॥

अर्थ—अति अनुपम सातवाँ 'उत्तरकाण्ड' है जिसमें श्रीराम-सीता के राज्याभिषेक की कथा का सुन्दर व मन को मोहने वाला वर्णन है। 'तुलसीकृत' रामायण में और भी अनेकों प्रकार की कथाओं का वर्णन किया गया है।

दोहा-जग वारिधि को पार नहिं, ऐसो है फैलाव।
तुलसीदास कृपा करि, रचि रामायण नाव॥

अर्थ—संसार रूपी सागर का फैलाव इतना जटिल है कि इससे पार उतरना बहुत मुश्किल है अतः संत तुलसीदास जी ने कृपा करके इससे पार उतरने के लिये रामायण रूपी नाव रची है।

चौ०-श्रीरामायण स्वर्ग निसेनी, भक्त जनन कहँ आनन्द देनी।
श्रीरामायण सद्गुण माता, अज्ञ जाहिं पढ़ि होहिं सुजाता॥

अर्थ—यह रामायण स्वर्ग लोक की सीढ़ी है, जो भक्तों को आनंद देने वाली है। श्री रामायण श्रेष्ठ गुणों की माता है जिसको मूर्ख भी पढ़कर ज्ञानी हो जाता है।

चौ०-पापसमूह तूल की रासी, रामायण धनंज्य कनकासी।
मोह पुंज तम किरणि तुमारी, काम अग्नि कहँ शीतलवारी॥

अर्थ—पाप समूह रुई के ढ़ेर को जलाने के निमित रामायण आग

की चिनगारी है। यह अज्ञान के अन्धकार दूर करने के लिए सूर्य है, कामाग्नि शान्त करने के लिए शीतल जल है।

चौ०—रामायण शशि किरण सुहाई, संत चकोरन कहँ सुखदाई।
धन्य धन्य श्रीतुलसीदास धनि, जग हित रामायण रची भनी॥

अर्थ—यह रामायण सुन्दर चन्द्रमा की किरण है और संतरूपी चकोरों को सुखदेने वाली है। तुलसीदास जी को अनेकों धन्यवाद है जिन्होंने जगत के कल्याण हेतु रामायण बनायी।

चौ०—नीच ऊँच जेते नर नारी, श्रीरामायण सब कहँ प्यारी।
रामायण सो नेह लगावै, अधन अपत्य सो वित-सुत पावै॥

अर्थ—नीच ऊँच जितने भी नर नारी हैं, वे सब रामायण के अधिकारी हैं। रामायण में किसी जाति-पाति का भेदभाव नहीं है। रामायण से प्रेम करने वाला उसमें विश्वास रखने वाला निर्धन, संतान रहित हो तो वह धन तथा पुत्र को प्राप्त करता है।

दोहा—रामायण सो नेह किय, सिद्ध होत सब काम।
है सबको कल्याणदा, पढ़ि सुनि लेहु विश्राम॥

अर्थ—रामायण में श्रद्धा, प्रेम करने वालों के सभी कार्य सिद्ध होते हैं, यह सबको कल्याण देने वाली है इसे पढ़ने सुनने से मन को शान्ति मिलती है।

दोहा—निगमादिक सोई ब्रह्म कमंडल, रामायण सुस्थित गंगाजल।
भागीरथी समतुलसीदास पुनि, भाषा प्रचुर कीन जनु सुर धुनि॥

अर्थ—वेद शास्त्र ही कथा का कमण्डलु है उसमें रामायण गंगा जल के समान है। तुलसीदास जी भागीरथ के समान हैं, जिन्होंने गंगाजी के समान इसको भाषा में प्रचार किया है।

चौपाई—होति रहै इक ठाव, रामायण, तेहि मग आवत पाप परायण।
कछुक कान में परगई बाता, चलत पंथ कहुँ भयो पपाता॥

अर्थ—एक स्थान पर रामायण की कथा हो रही थी वहाँ एक पापी आ पहुँचा। उसके कानों में कुछ रामायण की बात पड़ गयी सो सुनते ही वह भागा और रास्ते में गिर गया।

चौपाई—गिरतहि तुरत छुटि तनु गयऊ, तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ।
ताहि लेन आये यमदूता, निज पाशन बाँध्यो मजबूता॥

अर्थ—गिरते ही उसका शरीर छूट गया तब वहाँ एक अद्भुत आश्चर्य हुआ। उसे लेने के निमित्त यमराज के दूत आये और उसे रस्सी से मजबूत बाँध दिया।

चौपाई—अति आतुर हरिजन तहँ आये, छीन लेन बहु त्रास दिखाये॥
रामायण पै सुनिये काना, ले जइहें बैठारि विमाना॥

अर्थ—उसी समय नारायण के पार्षद वहाँ आये और यमराज के दूतों को धमकाकर उसे छीन लिया और बोले इसने रामायण कानों से सुनी है। अतः हम इसे विमान में बैठाकर ले जाएँगे॥७॥

दो०—रामायण प्रताप सो। गयो पार्षदन साथ॥
दूत चले यम के सदन। खीजत मींजत हाथ॥

अर्थ—रामायण के प्रताप से वह पापी पार्षदों के साथ वैकुण्ठ को गया और यमराज के दूत क्रोध में हाथ मलते हुए यमलोक को पहुँचे।

चौ०-निज दूतन देखऊ विलखाता, पूछी भानु तनय कुशलाता।
किन तुमको दीनों दुख-भाई, चार चतुर तुम देहू बताई॥

अर्थ—अपने दूतों को व्याकुल देख यमराज ने कुशल क्षेम पूँछी। हे चतुर दूतों! बताओ तो तुम्हें किसने दुःख दिया है?

चौ०-कहा कहँ तुमसे महराजा, पूछत तुमहि न आवत लाजा।
कोऊ एक मृत्यु लोक बड़भागी, तुलसीदास भयो वैरागी॥

अर्थ—दूत बोले—महाराज! हम आपसे क्या कहें, आपके पूछने में लाज नहीं आती, जानकर पूछते हो, मृत्युलोक में कोई एक बड़भागी तुलसीदास वैरागी हुए हैं।

चौ०-रामकथा रामायण भाखी, सो लोगन घर घर धरि राखी।
जे जे विविध भाँती के पापी, मांसाहारी और सुरापी ॥

अर्थ—उस वैरागी तुलसीदास ने रामकथा रामायण रची है जो लोगों के घर घर में रखी है, जो अनेक प्रकार के माँस खाने वाले, सुरा पीने वाले हैं।

चौ०-तै सब मिलि रामायण सुनिहैं, कहिहैं लिखिहैं पाढ़िहैं गुनिहैं।
ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे, सत्य सत्य नृप वचन हमारे ॥

अर्थ—वे सब मिलकर रामायण सुनेंगे, कहेंगे, पढ़ेंगे और लिखेंगे। वे कोई भी तुम्हारे स्थान में नहीं आयेंगे। हे राजन्! हमारे ये वचन सत्य हैं।

चौ०-लेहू पाश ये आपनो, राखहु अपने पास।
अमल तुम्हारो अबउठो, सुनि यम भये उदास ॥

अर्थ—यह कहकर यमदूतों ने पाश फेंक दिया और बोले यह पाश अपने पास रक्खो, तुम्हारा अमल उठ गया है। यह सुन यमराज उदास हो गये।

चौ०-अपनि व्यथा कहि नहिं पाये, तब लगि दूत और तहँ आये।
कहन लगे रविसुत सों रोई, तव चाकरी न हमसे होई ॥

अर्थ—अपनी सब व्यथा वे कहने भी नहीं पाये कि तब तक वहाँ और दूत आये और रोकर यमराज से बोले कि तुम्हारी नौकरी अब हमसे नहीं होगी।

चौ०-जग में कहुँ न हुकुम तुम्हारो, यह सुनि यम चकि रहे विचारो।
अहो दूत मोहि कहो बुझाई, जिन दिन्हों मम हुकुम उठाई ॥

अर्थ—संसार में कहीं तुम्हारा हुक्म नहीं रहा, यह सुन यमराज बड़े चकित हुए और बोले—हे दूतों! मुझे समझाकर कहो, मेरा हुक्म किसने उठाया है?

चौ०–कहा कहैं कछु कही न जाई, तुलसीदास एक भयो गुसांई।
जिनकी रामायण जग व्यापी, तेई कीने पवित्र सब पापी॥

अर्थ—दूत बोले क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता एक कोई तुलसीदास नाम के गुसाई हुए हैं, उनकी रामायण जगत् में व्याप गयी जिसने सब पापियों को पवित्र कर दिया है।

चौ०–गये हम एक अधम गृह माहीं, अति दुख भयो जात कही नाहीं।
तहँ देखहूँ इक कपि बलवाना, उग्र सरूप सदृश हनुमाना॥

अर्थ—आज हम एक महापापी के घर गये सो वहाँ जो दुःख हुआ वह कहा नहीं जाता। वहाँ एक बलवान बानर हनुमानजी को देखा।

चौ०–प्राणन को ग्राहक भयो, तब हम भे अति दीन।
शरण शरण तव शरण हैं, अस्तुति बहुविधि कीन॥

अर्थ—हम तो पापी के प्राण लेने गये थे पर वह हमारे प्राणों का ग्राहक बन गया। तब हमने शरण हैं! शरण हैं! ऐसा तीन बार कहकर अति आर्त होकर हनुमानजी की अनेक प्रकार से स्तुति की।

दो०—तब तो ह्वै प्रसन्न कपिराई। हम सन पुनि परतीत कराई॥
धरि होइ रामायण जहवाँ। कबहुँ भुलि जायहुँ न तहवाँ॥

अर्थ—तब उन कपिराज ने प्रसन्न होकर हमसे ऐसी शपथ कराई कि जहाँ पर रामायण धरी हो वहाँ तुम भूलकर भी नहीं जाओगे।

दो०—जो श्रोता वक्ता रामायण। कबहूँ मति जायहु तेहि आयन॥
अस हमसो कपि शपथ कराई। तब छुटन पाये मुनिराई॥

अर्थ—जो रामायण के कहने सुनने वाले हैं, उनके घर तुम भूल कर भी मत जाना, जब कपिराज ने ऐसी सौगन्ध हमको दिलायी तब महाराज हम वहाँ से छुटे।

चौ०—सुनि यमराज बहुत घबराये। निकट बुलाय दूत समझाये॥
नाम रूप गुण कथा राम की। कियउ न फेरी तौन धाम की॥

चौ०-रामकथा रामायण भाखी, सो लोगन घर घर धरि राखी।
जे जे विविध भाँती के पापी, मांसाहारी और सुरापी ॥

अर्थ—उस वैरागी तुलसीदास ने रामकथा रामायण रची है जो लोगों के घर घर में रखी है, जो अनेक प्रकार के माँस खाने वाले, सुरा पीने वाले हैं।

चौ०-ते सब मिलि रामायण सुनिहैं, कहिहैं लिखिहैं पाढ़िहैं गुनिहैं।
ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे, सत्य सत्य नृप वचन हमारे ॥

अर्थ—वे सब मिलकर रामायण सुनेंगे, कहेंगे, पढ़ेंगे और लिखेंगे। वे कोई भी तुम्हारे स्थान में नहीं आयेंगे। हे राजन्! हमारे ये वचन सत्य हैं।

चौ०-लेहू पाश ये आपनो, राखहु अपने पास।
अमल तुम्हारो अबउठो, सुनि यम भये उदास ॥

अर्थ—यह कहकर यमदूतों ने पाश फेंक दिया और बोले यह पाश अपने पास रक्खो, तुम्हारा अमल उठ गया है। यह सुन यमराज उदास हो गये।

चौ०-अपनि व्यथा कहि नहिं पाये, तब लगि दूत और तहँ आये।
कहन लगे रविसुत सों रोई, तव चाकरी न हमसे होई ॥

अर्थ—अपनी सब व्यथा वे कहने भी नहीं पाये कि तब तक वहाँ और दूत आये और रोकर यमराज से बोले कि तुम्हारी नौकरी अब हमसे नहीं होगी।

चौ०-जग में कहुँ न हुकुम तुम्हारो, यह सुनि यम चकि रहे विचारो।
अहो दूत मोहि कहो बुझाई, जिन दिन्हों मम हुकुम उठाई ॥

अर्थ—संसार में कहीं तुम्हारा हुक्म नहीं रहा, यह सुन यमराज बड़े चकित हुए और बोले—हे दूतों! मुझे समझाकर कहो, मेरा हुक्म किसने उठाया है?

चौ०-कहा कहैं कछु कही न जाई, तुलसीदास एक भयो गुसांई।
जिनकी रामायण जग व्यापी, तेई कीने पवित्र सब पापी॥

अर्थ—दूत बोले क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता एक कोई तुलसीदास नाम के गुसाई हुए हैं, उनकी रामायण जगत् में व्याप गयी जिसने सब पापियों को पवित्र कर दिया है।

चौ०-गये हम एक अधम गृह माहीं, अति दुख भयो जात कही नाहीं।
तहँ देखहूँ इक कपि बलवाना, उग्र सरूप सदृश हनुमाना॥

अर्थ—आज हम एक महापापी के घर गये सो वहाँ जो दुःख हुआ वह कहा नहीं जाता। वहाँ एक बलवान बानर हनुमानजी को देखा।

चौ०-प्राणन को ग्राहक भयो, तब हम भे अति दीन।
शरण शरण तव शरण हैं, अस्तुति बहुविधि कीन॥

अर्थ—हम तो पापी के प्राण लेने गये थे पर वह हमारे प्राणों का ग्राहक बन गया। तब हमने शरण हैं ! शरण हैं ! ऐसा तीन बार कहकर अति आर्त होकर हनुमानजी की अनेक प्रकार से स्तुति की।

दो०—तब तो ह्वै प्रसन्न कपिराई। हम सन पुनि परतीत कराई॥
धरि होइ रामायण जहवाँ। कबहुँ भुलि जायहुँ न तहवाँ॥

अर्थ—तब उन कपिराज ने प्रसन्न होकर हमसे ऐसी शपथ कराई कि जहाँ पर रामायण धरी हो वहाँ तुम भूलकर भी नहीं जाओगे।

दो०—जो श्रोता वक्ता रामायण। कबहूँ मति जायहु तेहि आयन॥
अस हमसो कपि शपथ कराई। तब छुटन पाये मुनिराई॥

अर्थ—जो रामायण के कहने सुनने वाले हैं, उनके घर तुम भूल कर भी मत जाना, जब कपिराज ने ऐसी सौगन्ध हमको दिलायी तब महाराज हम वहाँ से छुटे।

चौ०—सुनि यमराज बहुत घबराये। निकट बुलाय दूत समझाये॥
नाम रूप गुण कथा राम की। कियउ न फेरी तीन धाम की॥

अर्थ—यह सुनकर यमराज बहुत घबराये और दूतों को अपने पास वुलाकर उनको समझाया कि जहाँ भगवान के नाम, रूप, गुण की कथा होती हो उस धाम की तुम फेरी नहीं करना।

चौ०—अजामिल को सुरति करो जू। और न कछु चित्त मांझ धरो जू॥
थकि सो रहे दूत सुनि वानी। धनि श्रीरामायण महरानी॥

अर्थ—तुम अजामिल की कथा का स्मरण करो और कुछ मन में मत लाओ, सोचो कि वह नाम से ही तर गया। अजामिल महापापी था। मरते समय यमदूतों को देख भय से अपने पुत्र नारायण को पुकारा, उसके नारायण नाम पुकारने मात्र से ही भगवान् के पार्षद उसे वैकुण्ठ को ले गये। राम के नाम में इतनी शक्ति है कि उसका नाम लेने से अधम से अधम भी मोक्ष को प्राप्त होता है। दूत यह वाणी सुनकर थक रहे और बोले कि धन्य हैं श्रीरामायण महरानी।

दो०—रामायण तेजस्विनी, सत भाषा शिरमौर।
यमपुर जाको शोर है, समता कों नहीं और॥

अर्थ—रामायण वड़ी तेजस्विनी और श्रेष्ठ भाषाओं में सिरमौर जिसको तीनों लोक में तो क्या यमपुर में भी शोर मचा हुआ है तो उसकी समता को कौन प्राप्त हो सकता है।

चौ०—पातक मह लग्यो किन होई। रामायण सुनि रहै न कोई॥
चाहे चारौं फल को साधन। करु रामायण को आराधन॥

अर्थ—चाहे कैसा भी पातक लगा हो, रामायण के सुनने से नहीं रहता, जो चारों फलों के पाने की इच्छा रखते हों तो रामायण को आराधना करना उचित है।

दो०—रामायण सुनि पाप पराने। जिमि हिम ऋतु महँ मसक नसाने॥
कलियुग तरन उपाय न कोई। राम भजन रामायण दोई॥

अर्थ—रामायण के सुनने से पाप नष्ट हो जाते हैं, जैसे वर्षा ऋतु में

मच्छर नष्ट हो जाते हैं, कलियुग में तरने का दूसरा कोई उपाय नहीं है केवल दो ही उपाय हैं—एक राम का भजन और दूसरा रामायण की आराधना, कथा श्रवण।

दो०—कथा रामायण की जहँ होई। सो गृह घर मति जानै कोई॥
सो घर तीर्थ रूप सम भावै। तहाँ गये सब पातक नाशै॥

अर्थ—जहाँ रामायण की कथा होती है उस घर को केवल घर मत समझो वह घर तीर्थ के समान है, वहाँ जाने से सब पातक नष्ट हो जाते हैं।

दो०—पापवास देहीं महँ तब लग। श्री रामायण सुनै न जब लग॥
उदय पुरानो पुण्य होय तब। रामायण महँ मन लागै तब॥

अर्थ—तभी तक देह में पाप वास करता है जब तक रामायण न सुनी हो, जब सर्व जन्म के पुण्य उदय होते हैं, तब रामायण में मन लगता है।

दो०—रामायण के सुनत ही छूट जाय प्रेतत्त्व।
जाके पढ़े सुने ते सूझत है परतत्त्व॥

अर्थ—रामायण के अभ्यास से हृदय में प्रेमतत्व का संचार होता है और उसको पढ़ने सुनने से परमात्मा का ज्ञान होता है।

दो०—को जाने रामायण को रस। यह तो है संतन को सरवस॥
वनज सनेही अलिगण जैसे। भक्तन प्रिय रामायण तैसे॥

अर्थ—इस रामायण के तत्व को हर कोई प्राणी नहीं जान सकता, इसे तो सरल हृदय वाले सन्त-महात्मा ही जान सकते हैं। यह रामायण सन्तों के लिए सर्वस्व निधि है। जैसे कमलों के सनेही भौंरे हैं, उसी प्रकार भक्तों को रामायण प्राणों से भी प्यारी है।

दो०—त्यागी भक्तजन ग्रन्थ अनेकू। धारण किय रामायण एकू॥
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा। रसिक जननकहँ है रसरूपा॥

अर्थ—भक्तजनों ने अनेक ग्रन्थों को छोड़ रामायण को ही धारण किया है, भक्तों को यह अनुपम भक्ति देने वाली और रसिक जनों को अमृत के समान रस देने वाली है।

दो०—ज्ञानमयी तिनकहँ जे ज्ञानी। तुलसी तारण तरण बखानी॥
काम क्रोध रुज वश संसारा। औषध रामायण अनुसारा॥

अर्थ—तुलसीदासजी ने ज्ञानियों के लिए रामायण ज्ञानरूप और तारण तरणरूप कहा है। सारा संसार काम, क्रोध, मद, मोह के भयानक रोग से पीड़ित है उससे छुटकारा पाने के लिये रामायण के सिवाय दूसरी औषधि नहीं है।

दो०—रामायणमहँ नेह न जाको। जीवत शव समजानिय ताको॥
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं। वृथा जन्म ताको जग माहीं॥

अर्थ—रामायण में जिसका प्रेम नहीं है, वह जीवित ही मृतक के समान है। जिसको रामायण से स्नेह नहीं उसका जगत् में जीवन वृथा है।

दो०—रामायण अमृत कथा लेत न ताको स्वाद।
तिनको निश्चय जानिये हैं, पूरे मनुजाद॥

अर्थ—इस रामायण की अमृत कथा का जो मनुष्य स्वाद नहीं लेते हैं, उनको पूरा निशाचर जानना उचित है।

दो०—रामायण विधि कहौं विशारद। सनत्कुमार सों भाषी नारद॥
सहित विधान सुनै जो कोई। सहज मुक्ति पावै नर सोई॥

अर्थ—अब इस रामायण के सुनने की विधि कहते हैं—जो सनत्कुमार ने नारद से कही है। जो मनुष्य इसे विधान से सुनते हैं, वे निश्चय मुक्ति को प्राप्त होते हैं।

कार्त्तिक माघ चैत्र चित लाई।
नव दिन कहै कथा सुखदाई॥
ब्राह्म मूहूर्त समय हो जबहीं।
कर्म करै शोचादिक तबहीं॥

अर्थ—कार्त्तिक, माघ अथवा चैत्र के महीने में चित्त लगाकर सुख-दायी कथा को नौ दिन पर्यन्त कहें या सुनें। जब ब्रह्म मूहूर्त का समय हो तब उठकर शौचादि कर्म करें।

करै दन्त धावन लट जीरा।
मज्जन करै धरै मन धीरा॥
पुनि रामायण पुस्तक अरचै।
प्रेम सहित गंधादिक चरचै॥

दन्तधावन कर्म को कर, मन मैं धीर धारण करके स्नान करें। फिर रामायण की पुस्तक का पूजन कर प्रेम से चन्दनादि चढ़ावें।

ॐ नमोनारायण मन्त्र भनीजै।
तीन आहुति होम करीजै॥
मन वच कर्म पाप तनुकेरे।
छूटि जात नहिं आवत नेरे॥

अर्थ—'ॐ नमो नारायण' यह मन्त्र पढ़कर तीन आहुति दें, होम करें। तो निश्चय मन-वचन-कर्म के सब पाप छूट जाते हैं।

दो०—या विधि रामायण विधिहिं जे करिहैं चितलाय।
रामधाम ते जाइहें संसृति दुःखहिं मिटाय॥

अर्थ—इस प्रकार जो रामायण की विधि को मन लगाकर करते हैं, वे संसार के आवगमन के दुःख मिटाय रामधाम को प्राप्त होते हैं।

चौ०—है बहुं भाँति कार्य जगमाहीं।
रामायण सों सब है जाहीं॥

अर्थ—संसार में अनेक प्रकार के कार्य हैं। परन्तु रामायण से सब सफल हो जाते हैं।

दो०—सकल भाँति मनोकामना, यह दोहा दातार।
रामायण महँ खोजकर, करु याको अनुसार॥

अर्थ—सम्पूर्ण प्रकार की मनोकामनाओं को यह दोहा देने वाला है, रामायण में खोजकर इसके अनुसार कार्य करो।

दो०—वह शोभाजु समाज सुख, कहत न बनै खगेश।
बरणैं शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश॥

अर्थ—कागभुशुण्डिजी बोले हे गरुड़जी! श्रीरामजी के राज्य की शोभा, समाज और सुख का वर्णन नहीं हो सकता, चाहे शेष और सरस्वती वर्णन करें, परन्तु शिवजी उस रस को विशेष जानते हैं।

श्लोक—आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः।
कविता-मञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता॥

अर्थ—इस आनन्दकानन में तुलसीदास जंगम तुलसी वृक्ष हैं, जिनकी कविता रूपी मञ्जरी रामरूपी भ्रमर से भूषित है।

छन्द—धनिधन्य तुलसीदास जिन, जग हेतु रामायण भनी।
माहात्म्य अमित न कह सकौं, रस विषय महँ मो मति सनी॥
निज बुद्धि के अनुसार कहि, कृपालु सद्‌गुरु की दया।
रघुवीर यश की अधिकता, श्री सन्तजन करिहँहि मया॥

अर्थ—तुलसीदासजी धन्य हैं, जिन्होंने जगत् के हेतु रामायण रची है, मैं रामायण का माहात्म्य कहने को समर्थ नहीं हूँ, क्योंकि मेरी मति तो विषय रस में सनी रहती है। कृपालु, दयालु सद्‌गुरु की कृपा से अपनी बुद्धि के अनुसार भगवान् श्रीराम के चरित्र का माहात्म्य वर्णन किया। भगवान् श्रीराम की कथा जो अति विस्तृत एवं अगाध भक्तिप्रद है उसे सन्तजन कृपा कर अवश्य स्वीकार करेंगे।

दो०—एक श्लोक जो नित्य प्रति, पढ़ै प्रेम मन लाय।
भक्त सदा सुख पावहीं, जन्म सफल हो जाय॥

अर्थ—निम्नलिखित परम-पावन भुक्ति-मुक्ति प्रद रामायण के एक श्लोक का भी जो प्रतिदिन प्रेम से मन लगाकर पढ़ता है, उसका जन्म सफल हो जाता है, वह परम आनन्द को प्राप्त करता है।

श्लोक—आदौरामतपोवनादिगमनं हत्वामृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं,
पश्चाद्रावण कुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम्॥

अर्थ—रघुनाथजी का जन्म, व्याह होना, तपोवन में जाकर सुवर्ण के मृग को मारना, फिर सीताहरण, जटायु का मरण, सुग्रीव से भेंट, वालि का मरण, महावीरजी का सागर को लाँघना, लंका को जलाकर सुध लाना, पीछे श्रीरामचन्द्रजी द्वारा रावण, कुम्भकर्ण का मारा जाना, फिर अयोध्या का राज्य पाना इतनी रामायण है।

प्रमाण—श्रीयुक्त गोस्वामी तुलसीदासजी कृत रामचरितमानस, सञ्जीवनी टीका श्रीपण्डित ज्वाला प्रसादजी मिश्र कृत।

श्रीरामायण जी का मंगलाचरण

रामलखन सीता भरत, रिपुसूदन पवन कुमार।
कीस राज सुग्रीव को, बंदऊँ बारम्बार॥
सुमिरत ही जाके चरण, सोच दूर हो जाय।
जनक सुता जग जननी को, बन्दौं सीस नवाय॥
अक्षमारी लंका दही, जनक सुता दुःख टार।
वीर अंजनी नन्द को, वंदऊ बारम्वार॥
गोखुर सम सागर कियो, निसिचर मसक समान।
रामायण माला रतन, बंदऊँ श्री हनुमान॥

कविता शाखा पर चढ़ै, कोकिल रूप मुनीष।
राम-राम बोलत मधुर, बन्दौं धरि शीश॥
बंदऊ तुलसी के चरण, जिन्ह कीन्हों जग काज।
कलि समुद्र बूड़त लख्यो, प्रगटेऊ सप्त जहाज॥
बंदऊँ तुलसी संत के, चरन कमल मन लाय।
रामचरित चिन्तामणि, भक्तन दियो हैं गाय॥
मम मन हरि पद सुमिरि करी, कहुँ मानस अभिराम।
जे कहि सुनी वा पाठ करी, पूजत मन के काम॥

श्रीरामचरित मानस, "पुस्तक मात्र" नहीं बल्कि हमारे हिन्दू धर्म का प्राण है, इसका सिद्धान्त त्रिकाल सत्य है।

चौ०—रामचरित मानस विमल, संतन जीवन प्राण।
हिंदू आन को वेद सम, अब नहीं प्रगट करान॥

अर्थ—श्री रामायण का अनुष्ठान करने से सब कर्म सिद्ध होते हैं।

अनुष्ठान करने वालों के लिये नियम—

१—भूमि पर हीं शयन करें।

२—एक समय सात्विक आहार करें।

३—सत्य बोलें, यथा शक्ति मौन रहें।

४—मन्त्र का जप अधिक से अधिक करें।

एक बार में कार्य सिद्ध न हो तो निराश मत होइये, यह मन्त्र उन्हीं लोगों के लिये है, जिसकी रामचरित मानस में श्रद्धा है। दृढ़ निश्चय कीजिये अवश्य लाभ होगा।

निष्काम भाव से जप करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है।

पाठ आरम्भ करने से पहले अपनी पुस्तक को प्रणाम करके विधि-पूर्वक पाठ शुरू करना चाहिये, रामायण रामचन्द्रजी का अंग है।

•

मानस के सिद्ध मन्त्र

१. जीवन सुधार के लिये—

मोरि सुधारि हौं सब भाँती।
जासु कृपा नहीं कृपा अघाती॥

२. विपत्ति नाश के लिये—

राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत विपति भंजन सुखदायक॥

३. विघ्न नाश के लिये—

सकल विघ्न व्यापहि नहीं तेही।
राम सकृपा विलोकहिं जेही॥

४. खोयी हुई वस्तु की प्राप्ति के लिये—

गई वहोरि गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू॥

५. वैराग्य की प्रप्ति के लिये—

मन करि विषय अनलवत जरई।
होई सुखी जो एहि सर परई॥

६. दुर्भाग्य को दूर करने के लिये—

मंत्र महामनि विषय व्याल के।
मेटत कठिन कुअंक भाल के॥

७. संकट नाश के लिये—

जो प्रभु दीन दयाल कहावा।
आरति हरन वेद जसु गावा॥
जपहि नाम जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥

दीनदयालु विरद सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

सत्य संघ छाड़े सर लच्छा।
काल सरिस जनु चले सुपच्छा॥

८. विद्या प्राप्ति के लिये—

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्पकाल विद्या सब आई॥

९. जीविका प्राप्ति के लिये—

विश्वभरन पोषक कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

१०. कातर (आर्त-प्राणी) की रक्षा के लिये—

मोरे हित हरि सम नहीं कोऊ।
एहि अवसर सहाय सोई होऊ॥

भक्त कल्पतरु प्रनतहित, कृपा सिन्धु सुख धाम।
सोई निज भगति दिन्हीं मोही, प्रभुदया करि राखि राम॥

११. यात्रा की सफलता के लिये—

प्रविसि नगर कीजे सब काजा।
हृदय राखि कोसलपुर राजा॥

चढ़ि रथ सीय सहित दोऊ भाई।
चले हृदय अवधहि सिरनाई॥

१२. संदेश नाश के लिये—

राम कथा सुन्दर करतारी।
संसय विहग उड़ावनहारी॥

१३. विचार शुद्धि के लिये—

ताके जुगपद कमल मनावऊँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावऊँ॥

१४. विरक्ति के लिये—

भरत चरित करि नेमु तुलसी जे सादर सुनही।
सीयराम पद पेमु अवसि होई भवरस विरती॥

१५. वैराग्य के लिये—

मन करि विषय अनल बन जरई।
होई सुखी जो एहि सर परई॥

१६. उपद्रव तथा रोग शान्ति के लिए—

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज्य काहू नहीं व्यापा॥

१७. विष नाशक के लिये—

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फल दीन्ह अमी को॥

१८. मस्तिष्क की पीड़ा को दूर करने के लिए—

हनुमान अंगद रन गाजे।
हाँक सूनत रजनीचर भाजे॥

१९. दरिद्रता दूर करने के लिये—

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के॥

२०. सुख सम्पत्ति के लिये—

जिमि सरिता सागर महुँ जाही।
जद्यपि ताहि कामनां ताही॥

२१. शत्रुता नाश के लिए—

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा।
नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा॥

२२. रक्षा के लिये—

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धृतवर चाप रुचिकर सायक॥

२३. भूत-प्रेत को भगाने के लिये—

प्रनवऊँ पवनकुमार खल बल पावक ज्ञानधन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चापधर॥

२४. नजर झाड़ने के लिये—

स्याम गौर सुन्दर दोऊ जोरी।
निरखहिं छबि जननी तृन तोरी॥

२५. कामवासना नाश के लिये—

जय सच्चिदानन्द जप पावन।
अस कहि चलेउ मनोज नसावन॥

२६. गुप्त मनोरथ सिद्धि के लिये—

सुनहु देव सचराचर स्वामी।
प्रनतपाल उर अन्तर्यामी॥
मोर मनोरथ जानहु नीके।
बसहु सदा उर पुर सबही के॥

२७. खेद नाश के लिये—

जब ते राम व्याहि घर आये।
नित नव मंगल मोद बधाए॥

२८. विवाह के लिये—

तव जनक पाई वसिष्ठ आयसु,
व्याह साजि सँवारि कै।
माण्डवी श्रुत कीरति उरमिल,
कुअँरि लहई हँकारि कै॥

२९. पुत्र प्राप्त करने के लिये—

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन न जात।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान॥

३०. शत्रु से मित्रता के लिये—

गरल सुधा रिपु करहि मीताई।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥

३१. ज्ञान प्राप्ति के लिये—

क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम शरीरा॥

३२. सभी सुखों की प्राप्ति के लिये—

सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई।
लहहिं भगति गति संपति नई॥

३३. भय से बचने के लिये—

पाहि-पाहि रघुवीर गोसाईं।
यह खल खाई काल की नाईं॥

३४. कार्य सिद्धि के लिये—

स्वयं सिद्ध सब काज,
नाथ मोहिं आयसु दियऊ।
अस विचारि जुबराज,
तन पुलकित हरषितहि भयउ॥

३५. ज्वरादि नाश के लिये—

त्रिविधि दोष दुख दारिद दावन ।
कालि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥

३६. अन्न आदि की समृद्धि के लिए—

विश्व भरण पोषण कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ॥

३७. अनेकों प्रकार के उत्सव के लिए—

जब ते राम ब्याहि घर आये ।
नित नव मंगल मोद वधाये ॥

३८. संसार में विजय हेतु—

सखा धर्ममय अस रथ जाके ।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥

अध्यात्म रामायण

बाल काण्ड

जीवात्मा दशरथजी पंचक्रोशात्मक शरीर अयोध्या पुरी के अधिपति थे। उनकी तीन रानीयाँ थीं। निवृत्तिरूपी कौशल्याजी, प्रवृत्तिरूपी कैकेयीजी एवं भक्तिरूपी सुमित्राजी। जीवरूपी आत्मा दशरथ ने सुकर्मरूपी शृङ्गी ऋषि से यज्ञ करवाया जिसके प्रसाद से पुत्र निवृत्ति कौशल्याजी से ज्ञान राम प्रकट हुये।

प्रवृति कैकेई से वैराग्यरूपी भरत प्रगट हुये।

भक्तिरूपी सुमित्राजी से विवेकरूपा लक्ष्मण तथा विचाररूपी शत्रुघ्न प्रकट हुये। विश्वासरूपी विश्वामित्रजी ने भगवत् आराधनारूपी यज्ञ को किया। पाँचो विषयरूपी निशाचर गण विघ्न करते थे जिससे तंग आकर विश्वासरूपी विश्वामित्रजी ने यज्ञ रक्षा के लिए—जीव दशरथ से ज्ञानरूपी राम और विवेकरूपी लक्ष्मण को माँगा। मीन प्रतिमा दशरथजी ने देने से अस्वीकार कर दिया परन्तु विज्ञानरूपी कुल गुरु वशिष्ठजी की आज्ञा से दोनों पुत्रों को उन्हें सौंप दिया। ज्ञान राम, विवेक लक्ष्मण दोनों राजकुमार सहंषरूपी पर्वत पर विश्वासरूपी विश्वामित्रजी के साथ चले गये। ज्ञानरूपी राम ने भ्रान्तिरूपी ताड़का तथा विषय विकाररूपी मारीच सुबाहु आदि निशाचरों का वध किया, यज्ञ की रक्षा करके विश्वासरूपी विश्वामित्रजी के साथ जनक पुर को गये। रास्ते में तपरूपी गौतम की नारी का उद्धार ज्ञानरूपी राम ने किया। निरगुणरूपी जनकजी ने प्रण किया कि जो भी देह अभिमानी पिनाक को तोड़ेगा उसे ही शान्तिरूपी सीता मिलेगी। ज्ञानरूपी राम शान्तिरूपी सीता के स्वयंबर में आये। अज्ञानरूपी रावण और मोहरूपी वाणासुर देह अभिमानरूपी धनुष को तिलभर भी नहीं हटा सके और लज्जित हो गये। अन्तःकरण की वृत्तियाँरूपी दस हजार राजाओं ने मिलकर एक साथ शक्ति लगाई। वह भी लज्जित होकर चले गये। अन्त में ज्ञानरूपी रामजी ने ही सूक्ष्म देहरूपी अभिमान पिनाक को सहज में तोड़ दिया, जिसको 'तत्त्वमसि' ऐसा शोर तीनों लोकों में हुआ। तीनों

लोकोंरूपी स्थल, सूक्ष्म करण देह में छा गया। देह अभिमानरूपी पिनाक के टूटते ही शान्तिरूपी सीताजी ने जयमाला ज्ञानरूपी राम के गले में डाल दी। ज्ञानरूपी राम को शान्तिरूपी सीता, वैराग्यरूपी भरत को क्षमारूपी माण्डवी, विवेकरूपी लक्ष्मण को श्रद्धारूपी उर्मिला, विचाररूपी शत्रुघ्न को दयारूपी कीर्ति व्याही गई। देह अभिमान टूटा जिसके शब्द को, शोर को सुनकर अविवेकी परसुरामजी आए और विवेकरूपी लक्ष्मण-जी बहुत तेरे प्रलाप-संवाद करते रहे। अन्त में अविवेकरूपी परसुरामजी पराभूत हो गये और ज्ञान राम को ब्रह्म का अवतार समझकर भ्रमरूपी धनुष दियाजो ज्ञानरूपी रामजी ने निश्चयरूपी बाण को चढ़ा दिया। तब परसुरामजी अनेकों प्रकार से स्तुति करके तपोवन को चल गये।

इति वालकाण्ड समाप्त

"अथ अयोध्या काण्ड"

जीव आत्मा दशरथ ज्ञान रामजी को मोक्ष पद राज्य देना चाहते थे। परन्तु प्रवृत्ति कैकई ने ममतारूपी दासी मन्थरा की बातों में आकर ज्ञान राम को भवाटवी वन में भेज दिया। उनके साथ शान्ति सीता और विवेक लक्ष्मण वन को चले गये। जीवात्मा दशरथ ने अपने मन्त्री सतो-गुणरूपी सुमंत को आज्ञा दी कि शान्ति सीता सहित दोनों कुमारों को वन दिखाकर चारों अवस्थारूपी चार दिन में वापस लौट आना। सतो-गुण सुमंत ने शान्ति सीता, विवेक लक्ष्मण और ज्ञान राम को धर्मरूपी रथ पर बिठा लाया जिसके रथ के दो चक्के थे सम-दम रूपी चक्के थे। नियम-संयम दो घोड़े थे। मुमुक्षु निषाद राज के मिल जाने पर ज्ञान राम ने सतोगुण सुमंत को रथ सहित वापिस कर दिया और आप ईड़ा-पिंगला, गंगा-जमुना के संगमरूपी सुषुमणा त्रिवेणी में स्नान कर गंगा पार गये। रास्ते में सन्तोष तपस्वी के मिलने से मुमुक्ष निषाद को वापस कर दिया और आप समाधानरूपी भरद्वाज ऋषि की और समान भाव-रूपी याज्ञवल्क्यादिक ऋषियों के दर्शन करते हुये सुस्थिर चितरूपी चित्रकूट में जाकर दृढ़ता रूपी पर्ण कुटी में रहने लगे।

अयोध्या काण्ड समाप्त

"अथ आरण्य काण्ड"

तदनन्तर यशरूपी अत्रि ऋषि के आश्रम में गये। जिनकी पत्नी शुभ कृति अनसुया ने शान्ति सीता को पति भक्ति स्त्री धर्म की शिक्षा दी। उसके उपरान्त ज्ञान राम साधकरूपी मुनियों के साधनरूपी मनोरथ को सफल करते हुए प्रथम गोदावरी के समीप पर्णकुटी में कुछ काल निवास किये। एक दिन पंच विषय पंचवटी में तृष्णारूपी सुपर्णखा की दृष्टि ज्ञानरूपी राम पर पड़ी तथा उसने अपनी अभिलाषा प्रगट की। ज्ञान राम के संकेत से विवेक लक्ष्मण ने उसे कान नाक से रहित कर दिया, खरदुषन त्रिशिरारूपी लोभ-दम सहित भ्राताओं के पास जाकर नाक-कान से रहित होने का वृतान्त कह सुनाई और शान्ति सीता का प्रलोभन दिया, जिससे उन तीनों ने रुष्ट होकर अशुभ विकार आदि सेनाओं के सहित ज्ञान राम को घेर लिया। ज्ञान राम ने 'शिवोऽहम्' महावाक्य कह करके (शिवोऽहम्-शिवोऽहम् चिदानन्द रूपम् प्र०) इन सभी निश्चरों का संहार कर दिया। तृष्णारूपी सुपर्णखा उनकी विनाशी दशा को देखकर मनरूपी रावण के पास जाकर मारिच को साथ में लिया और कपटरूपी मारिच ने अनहोनी कंचन मृगरूप धारण करके ज्ञान राम को आर्कषित किया। ज्ञान राम उनके पीछे चले। कुछ समय में कुछ दूरी पर उसे मार गिराया। इधर एकान्त में मनरूपी रावण ने शान्ति-रूपी सीता को चुरा ले गया और संसाररूपी लंका की अशोक वाटिका में ले जाकर रख दिया। सत्संग-रूपी त्रिजटा उसके पास बैठी रहती है। ज्ञान राम विवेकरूपी लक्ष्मण के साथ वापस आने पर स्थान शान्तिरूपी सीता से रहित देखकर बहुत दुःखी हुए और सीता की तलाश में आगे चले। वे मुमुक्षतारूपी सबरी की झोपड़ी में पहुँचकर उसे कृतार्थ किये। स्वधर्म पम्पासर में जाकर स्नान किया और निर्विकल्परूपी छाया भेज बैठे। उसी समय शीलरूपी नारद वहाँ आए और उन्होंने बहुत प्रकार से ज्ञानरूपी राम की स्तुति की और उन्हें ज्ञानरूपी राम ने अपने स्वरूप-रूपी भक्ति पद दे विदा किया। (अरण्य काण्ड समाप्त)

अथ किष्किन्धा काण्ड

उसके उपरान्त ज्ञान राम वहाँ से आगे चले गये। वे सामने स्नेहरूपी ऋष्यमुक पर्वत पर आए, जहाँ पर देहात्मक सुग्रीव ब्रह्मचर्य व्रत वाले हनुमानजी के साथ अज्ञानरूपी बालि के भय के कारण रहता था। ज्ञान राम संशयात्मक सुग्रीव दोनों में शास्त्र कृत प्रमाण साक्षी कर मित्रता हुई। जिसमें अज्ञानरूपी बालि का भय देने का सम्पूर्ण हाल कह सुनाया ज्ञान राम ने सप्तभूमिरूपी ताड़वृक्ष का छेदन करने के बाद अज्ञान बाली का वध किया। सात भूमिका के भिन्न-भिन्न नाम बताये जिसके वध से अशक्तिरूपी तारा, विलाप करने लगी। उसकी विकलता को देखकर ज्ञान राम ने उसे तत्त्व निर्णयरूप उपदेश दिया, जिससे उसकी व्याकुलता दूर हो गई और वह अपने को कृतार्थ मानने लगी।

(इति किष्किन्धा काण्ड समाप्त)

अथ सुन्दर काण्ड

ब्रह्मचर्य व्रत हनुमानजी ने निश्चयात्मक जामवन्त की सलाह से आशा नाम समुन्द्र को सहज ही में पार करके संसाररूपी लंका में प्रवेश किया और शान्ति सीता की खबर लगा ली। स्थिरितारूपी समुद्र को लंघन के पश्चात संसाररूपी लंका में ब्रह्मचर्य तेज से जलाकर लगनरूपी मणि लेकर समुद्र पारकर वापस आकर शान्ति सीता की खबर ज्ञान राम को सुनाई। ज्ञान राम, ज्ञान राम, साधना आदि कर बन्दरों की सेना से आशारूपी समुद्र में ऊपर राम सेतु बाधकर उस पार उतर गये। सुबोध-रूपी विभीषण ज्ञान राम से आ मिले।

इति सुन्दरकाण्ड समाप्त

अथ लङ्काकाण्ड

साधना आदि रीच्छ बानर सहित ज्ञान राम ने धावा किया विवेक लक्ष्मण ने कामरूपी मेघनाद की शक्ति से मूर्छित हो गये, जिनको ब्रह्मचर्य वृत्ति हनुमानजी ने सत्य वृत संजीवनी लाकर चेतन किया। उसके पश्चात् विवेक लक्ष्मण ने अपनी तेज शक्ति से कामरूपी मेघनाद का संहार किया। इसके पश्चात् समती मन्दोदरी ने मन रावण को बलोन्मत्त कुम्भकर्ण के मरने के बाद बहुत समझाया था। परन्तु वह हठ धर्मीमन हिंसकधर दसों इन्द्रियों द्वारा विषयरूपी मुखवाला तथा दशों दिशाओं में गमन मत रूप ने उसके अनुरोध पर कुछ ध्यान न दिया। अन्त में वह मारा गया। उसकी हस्ती मिटना ही उसका नाश होना है। फिर सुबोध विभीषण को संसार लंका का निर्भय पद अभेदरूपी राज्य दे दिया।

इति लङ्काकाण्ड समाप्त

अथ उत्तरकाण्ड

ज्ञान राम, शान्ति सीता, विवेक लक्ष्मण तथा साधनादिक वानरों के साथ अनुरागरूपी पुष्पक विमान पर सवार होकर पथ कोष अयोध्यापुरी में आये। वैराग्य भरत को गले से लगाया तथा इन्द्रादिक इन्द्रियादिकों के देवतारूप पुरवासियों से मिले और उनका शोक दूर किया। अतः अविचल तुरीयातीत पदरूप अखण्ड राज्य सिंहासन पर बैठे।

इति उत्तरकाण्ड समाप्त

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते॥

अर्थ—वह परमात्मा तत्त्व पूर्ण है, यह सृष्टि पूर्ण है। पूर्ण से ही पूर्ण उत्पन्न होता है। पूर्ण से पूर्ण घटाने पर पूर्ण ही अवशिष्ट रह जाता है। अतः पूर्ण पूर्णों में पूर्ण है।

सोरठा—गड्ढा नीर का फुटा।
पत्ता जो डाल का टूटा॥
ऐसी नर जिन्दगी तेरी।
अब मान ले मेरी,
भंजन कर, मत कर देरी॥

●

काशी की महिमा

दोहा—विश्वनाथ सम लिंग नहीं नगर न काशी आन।
मणीकर्णिका सो तीर्थ नहीं जग में कहत महान्॥
मानुष तन वह धन्य है विश्वनाथ जो देख।
जन्म लिये कर विश्व में एक यही फल लेख॥

दोहा—काशी में बसिये सदा, कबहु न करिये पाप।
पुण्य यथा रुचि कीजिये शम्भु कहेऊ जस आय॥
दया दान दम युत रहे गंग नहाय जाय।
विश्वनाथ दर्शन किये मुक्ति मिले तेही धाम॥

दोहा—मानुष तन वह धन्य है जो काशी में आन।
विश्वनाथ दर्शन करे, श्री गंगा जल पान॥

दोहा—संत संगे गुरु संगे अंत संगे राम।
परसराम या जीव को तीन ठौर विश्राम॥

दोहा—खोद खाद धरती सही, काट कूट बराय।
कुटिल वचन तो संत सहे औरों से सहा न जाय॥

●

गिरिराज सुता की गोदी में खेलें गनेश

गिरिराज सुता की गोदी में खेलें गनेष।
ऊमा पार्वती के गोदी में खेलें गनेष॥

फिर आये देश-परदेश। गिरिराज सुता की···· ····
पिता तुम्हारो सबसे अधिकारी।
माता थारी राजदुलारी॥
ध्यावेगा शेष - महेष॥ गिरिराज···· ····

माता तुम्हारो लाड लडावे।
पैरों में पैंजन पहनावें॥
ध्यावेगा शेष - महेश। गिरिराज ···· ····

एक हाथ में कहिए लड्डू॥
एक हाथ में कहिए बरछी।
कारज तो थे आभा सरसी॥ गिरिराज ···· ····

रिद्धि सिद्धि दो नारी कहिये।
मूसे की असवारी कहिए॥
चले चाँदी का खाता। गिरिराज ···· ····

भक्त लोग थारा गुन गावें।
लडुवन का थारे भोग लगावें॥
भक्तों के संकट काट। गिरिराज ···· ····

सुबह शाम थारी पूजा होवें।
सन्त लोग थारा गुण गावें॥
सन्तों का कारज साध। गिरिराज ···· ····

•

भजन

मनुआँ कर गायन रामायण।
मुख पवित्र हो मन हो निर्मल होवे पाप पलायन ॥ मनुआँ····
छूटे माया तब यह काया लगे राम के पायन।
ऐसा अनुपम ग्रन्थ गुसाईं तुलसीदास बनायन ॥ मनुआँ····
पंच तत्व की जर्जर काया बट विकार लपटाया।
क्यों औषध पीता है मूरख पीले राम रसायन ॥ मनुआँ····
स्वास-स्वास हरि सुमिरन कीजै बृथा श्वास यह जायन।
आवागमन मिटा दे वन्दे नर से हो नारायण ॥ मनुआँ····

•

भजन

रघुवर तुम को मेरी लाज।
सदा सदा में सरन तिहारी, तुमहि गरीब निवाज ॥रघुवर····
पतित अधारण विरद तिहारो, त्रिभुवन में सुनी आवाज।
तौहें पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥रघुवर····
आज दुःख भंजन जनके यही तिहारो काज।
तुलसीदास पर किरपाकीजै भक्ति दान देवौ आज ॥रघुवर····

•

भजन

रटो रे मन नाम गुरु दिन रैन।
ध्यान धरो हिय गुरु मुरति को सो चाहो चित चैन ॥टेर॥
सेवा करो भाव भक्ति सो सुनो वचन सुख दैन।
करो दरस श्रीगुरु स्वामी को सफल करो निज जैन ॥ रटो रे····
सुरतरु काम धेनु चितामणि गुरु सम तनक तुलेन।
गुरु दाता ज्ञान विज्ञान के प्रेम भक्ति के ऐन ॥ रटो रे····
जीवन मुक्त होय जग मही दम्पति मिले सुखेन।
सरस माधुरी करै कर्म सब मिटे मोह मद मैन ॥ रटो रे····

•

भजन

झूला तो झूलो सतगुरु जी के बाग में (जी)।
कोई सोऽहं गावोरी मलार ॥ झूला ···· ····
प्रीति लगावो अमर नाम से जी।
कोई तजकर बूरा बिचार ॥ झूला ···· ····
पहले तो झूलो गुरुजी के चरण में जी।
कोई दूजो आत्मविचार ॥ झूला ···· ····
तीजो झूलो अनहद नाद में जी।
कोई चौथो श्रद्धासार ॥ झूला ···· ····
पंचम झूलो गुरुजी की आज्ञा मानना जी।
कोई छठी ज्ञान विचार ॥ झूला ···· ····
सातवाँ तो झूलो शिष्टाचार का जी।
कोई पूरण झुला का सार ॥ झूला ···· ····
सत गुरुजी साँवित्रीयाँ कहँ जी।
कोई दियो मारो आवागमन मिटाय ॥ झूला ···· ····

●

भजन

जगत में हैं गुरु हरि अवतार।
गुरु ते अधिक न और पदारथ आगम कहत पुकार ॥
गोविंद ही गुरु प्रगट होंय आये नर तन धार।
अति कृपाल करुना की मूरति जीवन करते पार ॥जगत में०
जिन-जिन शरण चरण गुरु कीन्ही कहा पुरुष कहा तार।
प्रेम भक्ति कर गये कृतारथ मिले युगल सरकार ॥जगत में०
हाजिर रहे हुक्म में गुरु के भक्ति मुक्ति फल चार।
अष्ट सिद्धि नय निधि खड़ी नित सेवत गुरु दरबार ॥जगत में०
तारन तरन हरन दुख संतृति श्री गुरु परम उदार।
सरस माधुरी घ्यान गुरुन को जीवन प्राण प्राधार ॥जगत में०

●

भजन होली

चलोरे सखी खेले गुरु संग होली।
यह अवसर फिर के नहीं आवे ऐसी कोटि करोरी।
मानुष तन हेतु राज सुहावन फागुन मास आयोरी।
चलोरी सखी खेले०

नवसत साज श्रृंगार सवाँरो भरो, प्रेम की झोली।
ममता अबीर गुलाल उड़ाकर के,
विषयों की धूप दे दो प्यारो।
चलोरी सखी खेले०

विरति मनोहर कर पिचकारी
ज्ञान रंग भर लोरी,
जोड़ी चार दुंदुभि बाजे।
अनुपम शोर भयोरी।
चलोरी सखी खेले०

अजपा शब्द दमाऊ झीनो
सुनत ही चीत हरोरी,
बाजत बैन मृदंग मुरलिया
शंख झाझ ढपढोली
चलोरी सखी खेले०

सोऽहम हंसा हंसा सोऽहं शून्यं शोर मचोरी।
मैं मेरे की सुध है नाहीं द्वैत भाव गयोरी॥
चलोरी सखी खेले०

आप आप में खेल मच्यो है, खेलत नवल किशोरी
चहुँ दीसि आनन्द उमड़ रह्यो है, सब सखिया खेलोरी
चलोरी सखी खेले०

•

मूल्य : २.०० मात्र

भेंटकर्ता : ओमप्रकाश जी बुबना